© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 1 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

रघुवंश में नदी : एक विमर्श

साधना देवी
शोधच्छात्रा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद

महाकाव्यों की महनीय श्रृंखला में रघुवंश महाकाव्य की निराली प्रतिष्ठा है। विष्णु के अवतार राम की कथा को आधार बनाकर लिखे गये इस वंश महाकाव्य में प्रकृति के चित्रण के साथ–साथ नदियों को भी संसार की जीवन रेखा के रूप में कवि ने अत्यन्त मेधा के साथ चित्रित किया है। महाकवि कालिदास की सर्वाधिक प्रिय नदी त्रिलोक–गामिनी गंगा नदी है। जिसका सर्वप्रथम वर्णन उन्होंने अपने महाकाव्य रघुवंश के प्रथम सर्ग से प्रारम्भ किया है। परम्परानुसार उन्होंने आकाश गंगा के प्रवाह का सुन्दर वर्णन किया है, जिसका सम्बन्ध राजा दिलीप को दिये गये शाप से है, जो उन्हें देवताओं की गाय कामधेनु ने रूष्ट होकर दिया थाः–

स शापो न त्वया राजन् न च सारथिना श्रुतः।

नदत्याकाशगङ्गायाः स्रोतस्युद्दामदिग्गजे।।

कवि ने बताया है, कि कामधेनु का अपमान राजा दिलीप द्वारा अनजाने में हो गया था तो उस काम धेनु ने राजा को पुत्र न होने का शाप दे दिया था। किन्तु यह शाप आकाश गंगा में स्नान कर ऐरावत दिग्गजों की दहाड़ के कारण न तो राजा सुन सके और न ही उनका सारथी।

इसी प्रकार दूसरे सर्ग में भी कालिदास ने गंगा का सुन्दर निरूपण करते हुए लिखा है। कि नंदिनी गाय की सेवा करने वाले राजा दिलीप की भक्ति की परीक्षा लेने के लिए वह नन्दिनी गाय–हरी घास चरती हुयी वन प्रान्त में गंगा प्रवाह के समीप अचानक हिमालय की गुफा में प्रवेश कर गयीः–

अन्येद्युरात्माऽनुचरस्य भावं जिज्ञासमाना मुनिहोम धेनुः

गङ्गाप्रपातान्तविरूढशष्पं गौरीगुरोर्गह्वरमाविवेश।।[1]

इसी भांति कवि ने वसिष्ठ के आश्रम से वर प्राप्ति के बाद सिंहासन पर बैठे राजा दिलीप के बारे में लिखा है कि जैसे आकाश ने अत्रि नामक ऋषि के नेत्रों से निकली हुयी चन्द्रमा रूपी ज्योति को धारण किया

था; और भागीरथी गंगा ने जैसे अग्नि से उगले हुए भगवान शंकर को धारण किया था; उसी भांति महारानी सुदक्षिणा ने भी नरपति राजा दिलीप के सूर्य कुल की वृद्धि हेतु लोक–पालों के तेजों से युक्त गर्भ को धारण किया।[2]

चतुर्थ सर्ग में कालिदास ने रघु के दिग्विजय प्रसंग में गंगा नदी का उल्लेख करते हुए लिखा है कि बं›देश के राजाओं को जड़ से उखाड़कर रघु ने गंगा की धारा के मध्य द्वीप में अपने विजय स्तम्भों को गाड़ दिया था। कालिदास ने इन्दुमती के स्वयंवर के प्रसंग में इन्दुमती और राजा अज के संयोग को उसी प्रकार बताया है, जैसे चन्द्रमा और चन्द्रिका का संयोग होता है तथा जैसे सागर और गंगा का संयोग होता है। वैसे ही इन्दुमती और अज का संयोग हो गया।

सप्तम सर्ग में इन्दुमती की रक्षा के लिए अज ने अपनी राजसेना को वैसे ही रोक लिया जैसे विशाल तरंगो वाला शोण भद्र नदी भागीरथी गंगा के प्रवाह को रोक लेता है।[3] रघुवंश के दशम् सर्ग में कवि ने गंगा को मोक्ष दायिनी के रूप में निरूपित किया है और लिखा है कि जैसे विभिन्न दशाओं के गति से आने वाला गंगा का प्रवाह सागर में गिरता है उसी प्रकार सारे आगम से भरा हुआ पुरूषार्थ चततुष्ठय साधना मार्ग होते हुए विष्णु में विलीन हो जाता है। और गंगा नदी की अलौकिक महिमा विष्णु के मुख से उच्चरित दाँतों की कांति से युक्त वह वाणीमानो ऐसी शोभा पा रही है, जैसे उनके चरणों से निकली हुई ऊपर को बहने वाली गंगा शोभा पाती है।[1] त्रपोदश सर्ग में आकाश गंगा की तरंग और त्रिधारा का चित्रण किया है साथ ही अत्रिमुनि की धर्म पत्नी अनसूया ने तपस्वियों के भगवान शंड्कर के मस्तक की माला बनी त्रिधारा गंगा में स्नान के लिए प्रवर्तन किया एवं उसमे खिले हुए कमलों को सत्पऋषियों द्वारा तोड़े जाने का संकेत है।[7] चतुर्दश सर्ग में महाकवि ने सीता के वनवास प्रसं› में गंगा तट का वर्णन किया है। वे लिखते हैं कि उस सीता ने गंगा के तटवर्ती उन तपोवनों में पुनः जाने की कामना की जहाँ मुनियों द्वारा दी गयी नीवार की बलि हिंसक जीव खाया करते थे और तपस्वियों की कुमारियों से उन्हे स्नेह हो गया था एवं जहाँ पर कुश आदि घास विद्यमान थी। वहीं पर लक्ष्मण द्वारा से उतारी गयी सीता को निषाद द्वारा गंगा पार कराये जाने का मार्मिक प्रसंग हृदय को अत्यन्त उद्वेलित करने वाला है।[8] षोडस सर्ग में कालिदास ने कुश के द्वारा गंगा को पार करने का तथा विन्ध्य तीर्थ का मनोहारी चित्र खींचा है। वे लिखते हैं कि कपिलमुनि के द्वारा क्रोध से भास्म शरीर वाले पूर्वजों ने देवलोक प्राप्ति के कारण गंगा का जल जो नौकाओं से क्षुभित हो गया था उस जल को राम के पुत्र कुश ने प्रणाम किया।[9] तदुपरान्त नर्मदा नदी का भी महाकवि ने अपने रघुवंश महाकाव्य में बड़ा ही मनोहारी चित्रण किया है। कवि ने अपने इस महाकाव्य के पंचम् सर्ग के 42वें से 59वें तक के पद्यों में नर्मदा नदी का उल्लेख किया है। राजकुमार अज की सेना थकी होने के कारण नर्मदा नदी के तट पर ही अपना पडाव डालती है तभी एक जंगली हांथी नर्मदा नदी से निकल कर वप्र क्रीडा को सूचित करता हुआ सा सुशोभित हो रहा था। पर्वत के समान विशाल वह हाथी सेवार की मज्जरियों के जाल को छाती सें खींचता हुआ जब तट पर पहुँचा

तो उससे पहले ही जलसमूह वाली उस नर्मदा नदी का प्रवाह तट पर पहुँच चुका था। उस श्रृंखला नर्मदा नदी के जल से निकले हुए हाथी ने क्षणभर में ही सेना विशेषको को अस्त–व्यस्त कर दियाः–

ऐतिहासिक महत्व–

रामायण आधारित ''रघुवंश'' में राजाओं की लंम्भी सुदीर्घ श्रृंखला तथा उनके संग्राम का वर्णन मिलता है। जिसमे राजा रघु ने युद्ध के समय मरूस्थलों को जलमय बना दिया। नदियों को सेना के लिए सुगमता पूर्वक जाने योग्य बना दिया और सघन वृक्षों से घिरे होने के कारण अंधकार पूर्ण कानन को हटा कर प्रकाशमय बना दिया था–

मरूपृष्ठान्युदम्भांसिनत्याः सुप्रतराः नदीः।

विपिनानि प्रकाशनि शक्ति मत्त्वाच्चकार सः।।[10]

इसी प्रकार नदियां युद्ध में अपना पूर्ण सहयोग देती हैं। जैसा कि रघुवंश महाकाव्य में युद्ध वर्णन प्रसंग में हम देखते हैं कि गंगा नदी से युद्ध में पूर्वी समुद्र की ओर जाने वाली विशाल सेना को ले जाते हुए महाराज रघु सुशोभित हुए–

स सेनां महतीं कर्षन पूर्वसागर गामिनीम्।
बभौ हरनटा भ्रष्टां गङ्गामिव भगीरथः।।[11]

इतिहास के रूप में नदियों का बहुत अधिक महत्त्व प्राचीन काल से ही रहा है। रघुवंश महाकाव्य को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय के इतिहास में युद्ध नदियों के तटों पर हुआ करते थे। इसलिए महाकवि कालिदास ने रघुवंश में रघु की दिग्विजय के प्रसं› में शब्दों का जो वर्णन किया है वह इस पद्य में देखा जा सकता है–

''दिलीपान्तरं राज्येतं निशम्य प्रतिष्ठितम्।

पूर्वं प्रधूमितो राज्ञां हृदयेऽग्नि रिर्वेथित्तः।।[12]

महाराजा दिलीप के बाद राज्यशासन पर उस महाराज रघु को सुप्रतिष्ठित सुनकर जिन शत्रु राजाओं के मन में पराजय परिताप का धुआं धधकने लगा। यह इतिहास का पृष्ठप्रमाण प्रस्तुत करता है। साथ ही उन नदियों और स्थानों का भी संकेत करता है। जहाँ–जहाँ रघु की सेना ने युद्ध करके अपने शत्रु राजाओं को नेस्तनाबूद कर दिया था। अतः सम्पूर्ण अवलोकन से ज्ञात होता है कि इतिहास के क्षेत्र में भी रघुवंश का अपना विशिष्ट स्थान है।

सांस्कृति महत्व–

रघुवंश 'महाकाव्य' में जिन ऐतिहासिक राजाओं का वर्णन कवि ने किया है उनका समग्र जीवन नदियों के अश्रित है। उन राजाओं की सुख समृद्धि उनके संस्कार शिक्षा दिक्षा राज काज और युद्ध समग्र कार्य नदियों ने देखी थी। कालिदास ने गंगा, नर्मदा, सरस्वती, सिन्धु यमुना कपिशा कावेरी, तमसा, गोदावरी, मन्दाकिनी, ताम्रपर्णी, मुरला, लौहित्या और कर्ण भूषण नदी का जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विवेचन प्रस्तुत किया है, वह भारत राष्ट्र और उसकी गौरवमयी संस्कृति के इतिहास को बताने वाला बहुत बड़ा प्रमाण है। इससे पता चलता है कि कालिदास वाल्मीकि के सनातन धर्म, परम्परा के अक्षुण्ण परम्पराओं को बनाये रखे हैं। इनकी रचनाओं में इतिहास अनेक करवटें बदली सभ्यता और संस्कृति के अनेक उतार चढाव उतुंग शिखर से लेकर पातालोन्मुख होते हुए दिखे इस सब की गाथा नदी के समक्ष ही लिखी गयी–

स सेना महतीं कर्षन् पूर्व सागर गामिनीम्

बभौ हरजटा भ्रष्टां गंगामिव भगीरथः।।[13]

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि कालिदास ने रघुवंश में सूर्यवंश के राजाओं का जो इतिहास लिखा हैं, भले ही वह काव्यात्मक शैली में क्यों न हो किन्तु सांस्कृतिक क्षेत्र में नदियों के साथ अवश्य समवेत है।

धार्मिक महत्वः–

महाकाव्यों के सूक्ष्म अवलोकन से ज्ञात होता है कि सभी महाकवियों ने वेद पुराण और स्मृति प्रतिपादित सनातन, धार्मिक तत्वों का समावेश अपनी रचनाओं में भली भांति किया है। उपजीव्य संस्कृत साहित्य से कथा वस्तु का आहरण कर इन महाकवियों ने उन सभी घटकों को समाहित किया है, जो प्राणि मात्र के कल्याण के लिये तथा जगत् के संचालन के लिये परम आवश्यक है और जिनके अभाव में मनुष्य अपना विकास नहीं कर सकता। भारतीय संस्कृति और समाज का प्राण धायक तत्व धर्म ही है और कहा भी गया हैः–

''धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।''[14]

सभी महाकवियों ने अपने मङ्गला चरण में ही विभिन्न देवताओं की स्तुति करके अपनी कृति को अजर–अमर बनाने का प्रयास किया है। साथ ही विभिन्न धार्मिकतत्वों की चर्चा भी पदे–पदे की है।[15] धर्म के महत्व को महाकवि कालिदास ने अपने सभी ग्रन्थों में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। जब हम **''रघुवंश महाकाव्य''** का अवलोकन करते हैं तो पाते हैं कि कालिदास ने जगत के पूज्य सूर्यवंश से अपनी रचना प्रारम्भ की है,

साथ ही पवित्र नदियों का भी स्मरण किया है। धर्म के महान् गायक **''वाल्मीकि''** का स्मरण करके कालिदास ने प्राचीन धार्मिक परम्परा का निर्वाह किया।[16]

कालिदास संसार को ये बताना चाहते हैं कि रघुवंश विश्व का एक सर्वश्रेष्ठ और सर्वशुद्ध वंश है, जो धर्म और नीति के मार्ग का अनुसरण करने के कारण सारे संसार पर एकच्छत्र राज्य किया करता था। कालिदास ने त्याग, तपस्या, सत्य, आश्रम, पुरूषार्थ, संस्कार आदि के साथ–साथ प्रणव (ऊँकार) और धर्म प्रवर्तक ''मनु'' का भी स्मरण किया है। आत्म–कर्म और क्षात्र धर्म के माध्यम से कवि ने धर्म की व्याख्या की है।[17] हिमालय सुमेरू आदि पवित्र पर्वतों के साथ पवित्र स्थलों और नदियों आदि का भी उल्लेख कालिदास ने किया है। रघुवंश में राजाओं के धार्मिक गुणों जैसे–परोपकार, दया, करूणा दान और त्याग आदि कालिदास ने स्पष्ट रूप से उकेरा है।

रघुवंश के प्रथम सर्ग में महाकवि कालिदास लिखते हैं कि –सांसारिक विषय वासनाओं से आकृष्ट न होने वाले एवं वेद वेदाङ्गो आदि चतुर्दश विधाओं के धर्मानुरागी बुद्धिमान् महाराज दिलीप जवानी में ही प्रचुर ज्ञानी हो गये थे। और यज्ञ के लिये प्रजा से उनकी आय का छठवां भाग लेकर पृथ्वी का और इन्द्र ने धान्य की वृद्धि के लिये स्वर्ग का दोहन किया:–

''दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्।

संपद्विनिमये नोभौ दधतुर्भुद्वयम्।।[18]

इसी प्रकार कालिदास ने वशिष्टमुनि के आश्रम का जो चित्रण किया है वह भी धर्म से ओत–प्रोत है। वे लिखते हैं कि उन राजा दिलीप ने संन्ध्या कालीन जप आदि नित्य कृत्य के बाद महातपस्वी गुरू वशिष्ट की पत्नी अरून्धती को आगे इस तरह बैठे हुए देखा, मानो अपनी पत्नी स्वरूपा स्वाहा देवी से सेवित साक्षात होमाग्नि है:–

''विधेः सांयतनस्यान्ते स ददर्श तपोनिधिम

अन्वासित मरून्धत्या स्वाह्ये हविर्भुजम्।।[19]

इससे पता चलता है कि कालिदास ने अपने रघुवंश में धर्म के स्वरूप को प्रतिपादित करने वाले तत्वों का समावेश इसलिए किया है कि धर्म के बिना संसार की और मनुष्य की गति नहीं है। मानव जीवन में पुरूषार्थो का स्थान सर्वोपरि माना गया है। कालिदास ने धर्म को पुरूषार्थ में सर्वप्रथम परिगणित किया है। धर्म आधारित जीवन ही सर्व प्रथम परिगणित किया है। धर्म आधारित जीवन ही सर्वश्रेष्ठ व पवित्र होता है, ऐसी कवि की दृढ मान्यता है।

निष्कर्ष–

इस प्रकार रघुवंश महाकाव्य में नदियों का ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्व रहा है। हिन्दू धर्म में दान, यज्ञ तपस्या, साधना, शिक्षा आदि नदियों के समीप ही हुआ करते थे। तथा आज भी नदियों पर धार्मिक कृत्यों का आयोजन किया जाता है। इससे हमें धर्म के महत्व का और उसकी उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त होता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी नदियों का राष्ट्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। यह वैदिक काल से लेकर आज तक वर्धित होता रहा है। नदियों के माध्यम से ही राष्ट्र का विकास होता है। राष्ट्र की उन्नति में छोटे से छोटे और बड़े से बड़े कार्यों को तथा धार्मिक अनुष्ठानों में नदियों का ही प्रदेय रहा है। समय–समय पर नदियों के किनारे लगने वाले मेले हमारी राष्ट्रीय एकता को दर्शाते हैं और हमें एक सूत्र में बांधकर रखते है। जिससे एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से मिलकर नई–नई नीतियां और योजनाओं का आदान प्रदान करते हैं। इसी से राष्ट्र का विकास होता है। अतः किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में नदियों का ऐतिहासिक सांस्कृतिक एंव धार्मिक महत्व रहा है जो कि रघुवंश महाकाव्य में पहले ही दर्शा दिया गया है।

सन्दर्भ सूची

1. रघुवंश–1 / 78
2. रघुवंश–2 / 26
3. अथ नयन समुत्थं ज्योतिरत्रेरिवधौः सुरसारिदिवतेजोा वह्निनिष्ठ्यूतमैशम..... लोकपालानु भावैः 2 / 75
4. शशिनमुपगतेंय कौमुदी मेघमुक्तं.....श्रवणकटुनृपाणामेक वाक्यं विवधुः 6 / 85
5. तस्याः स रक्षार्थ मनल्पयोध मादिश्य.....तां भगीरथीं शोण इवोन्तरड़गः 7 / 36
6. बभौ सदशनज्योत्स्ना सा.....गेवोर्ध्वप्रवर्तिनी
7. अत्राभिषेकाय तपोधनानां सत्पर्षिहस्तोद 10 / 37
   त्रिस्रोतसंन्यम्बक मौलि मालाम्। 13 / 51
8. सा दष्टनीवार बलीनि हिंस्रैः सम्बद्ध वैखान सकन्यकाानि इयेष भूयः कुशवन्ति गन्तुं भागीरथी तीरतपानानि। रथात्स यन्त्रा निगृहीत वाहान्तां भातृ जायां पुलिनेडवतार्य गड्गां निषादाहृतनौविशेषस्तवार सन्धामिव संत्य सन्धः।। रघुवंश (14 / 28–52)
9. स पूर्व जानां कपिलेन रोषाद् भस्मा वशेषी कृतविग्रहाणाम सुसलय प्राप्ति निमिन्त मम्भ स्त्रै स्रोत सं नौलुलितं ववन्दे। रघुवंश 16 / 34

10. रधुवंश –4 / 31
11. रधुवंश–4 / 32
12. रघुवंश–4 / 2
13. रघुवंश–4 / 32
14. सुभाषित, नीतिशकतक–भर्वहरिकृत
15. वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्त्ये। जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ–रघुवंश महाकाव्य 1 / 1
16. क्व सूर्य प्रभवोवंशः क्व चाल्पविषयामति। तितीर्षुर्दुस्तर महोडुपेनास्मि सागरम।। रधुं0 1 / 2
17. रघूणामन्वयं वक्ष्येतनु वाग्वि भवोऽपिसन्।
    तद गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः।। रधु0 1 / 9
18. रघु0–1 / 26
19. रघु0–1 / 56